आदरणीय शिक्षकगण,

आशा है आप सकुशल होंगे। आपके त्याग और तप से ही एक सुशिक्षित राष्ट्र का निर्माण संभव है।

शिक्षा के अधिकार कानून के लागू होने के बाद शिक्षा-क्षेत्र में कार्य कर रहे सभी जन के दायित्व और भी बढ़ गए हैं। 6-14 आयु वर्ग के बच्चों का यह अधिकार है कि वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे और इसे प्रदान करने के सभी उपादानों को संगठित, संतुलित और न्यायपूर्ण तरीके से उन तक पहुँचाना हमारा दायित्व है।

माँ-पिता के बाद बच्चों से सीधा संवाद यदि कोई स्थापित करता है, तो वह हैं आप शिक्षक। शिक्षक ही बच्चों का स्वाभाविक रूप से मार्गदर्शन कर उन्हें उनकी रुचि के अनुसार आगे बढ़ने में प्रेरक का कार्य करते हैं।

बिहार की नयी पाठचर्या एवं पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तकें बच्चों को खुद करके सीखने का अवसर प्रदान करती हैं। आप इस तथ्य से भली-भाँति अवगत होंगे। पाठ्यपुस्तक में संयोजित पाठ के उद्देश्य क्या हैं? उनसे गुजरकर बच्चों में कौन-से कौशल विकसित होंगे ? हम उनका सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कैसे करेंगे? शिक्षकों को इसकी स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। आपकी शैक्षिक ज़रूरतों, वर्ग-कक्ष में पाठ विनिमयन में आपको सहयोग करने के उद्देश्य से इस शिक्षण सहयोग संदर्शिका का निर्माण शिक्षकों द्वारा शिक्षकों के लिए किया गया है। यह प्रत्येक पाठ में उद्देश्य के साथ-साथ पाठ विनिमयन में की जाने वाली गतिविधियों के संयोजन एवं तद्नुसार सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की रूप-रेखा तैयार करने में आपका सहयोग करेगी, ऐसी आशा है। प्रथम चरण में कक्षा I से V तक की हिन्दी एवं गणित विषय की शिक्षण सहयोग संदर्शिका का विकास यूनिसेफ, बिहार के सहयोग से एस. सी.ई.आर.टी., पटना, बी.ई.पी. एवं बी.ई.क्यू.एम. के संयुक्त प्रयास से किया गया है। शेष संदर्शिकाओं का विकास प्रक्रियाधीन है।

आपसे अनुरोध है कि आप वर्ग विनिमयन और सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में इस संदर्शिका की सहायता लें तथा इस संदर्शिका को और मूल्यवान बनाने हेतु हमें सुझाव दें। आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद!

(राहुल सिंह)
राज्य परियोजना निदेशक
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

दिशाबोध

राहुल सिंह
राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

हसन वारिस
निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., पटना

मधुसूदन पासवान
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, प्रारंभिक एवं औपचारिक शिक्षा
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

दीपक कुमार सिंह
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, नवाचारी शिक्षा,
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना-सह-
कार्यक्रम प्रबंधक, बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

राजीव सिन्हा
प्रोग्राम मैनेजर, यूनिसेफ, पटना

डॉ. एस.ए.मोईन
विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा
एस.सी.ई.आर.टी., पटना

डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी
प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन
एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर (वैशाली)

अकादमिक संयोजक

डॉ. श्वेता सांडिल्य
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना

नीरज दास गुरु
संयुक्त कार्यक्रम प्रबंधक,
बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

नलिन कुमार मिश्र
संयुक्त कार्यक्रम प्रबंधक,
बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

डा0 उदय कुमार उज्जवल
अपर राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

भारत भूषण
विशेषज्ञ, शिक्षक-प्रशिक्षण
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

डा0 नरेश कुमार सिंह
विशेषज्ञ, अनुश्रवण एवं अकादमिक अनुसमर्थन
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

लेखन-सहयोग

जितेन्द्र कुमार, सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, महमदा, परैया, गया, **कृत प्रसाद,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, चंडासी, नूरसराय, नालंदा, **अरशद रज़ा,** सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा, रहुई, नालंदा, **अरविन्द कुमार,** साधनसेवी, प्रखंड-संसाधन केन्द्र, नगर निगम, गया, **विकास कुमार,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, बसकुटिया, चकाई, जमुई, **मनोज त्रिपाठी,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, फरना, बड़हरा, भोजपुर

समीक्षा एवं संशोधन-परिमार्जन

बिरेन्द्र सिंह रावत, शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **संजय शर्मा,** शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **डॉ. राकेश सिंह,** शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली, **चन्दन श्रीवास्तव,** शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **कृष्णकांत ठाकुर,** पूर्व राज्य साधनसेवी, बी.ई.पी., पटना, **सुमन कुमार सिंह,** मध्य विद्यालय, कौड़िया बसंत, भगवानपुर हाट, सीवान, **मनीष रंजन,** प्राथमिक विद्यालय, मित्तनचक मुसहरी, सम्पतचक, पटना

शिक्षकों के लिए संदेश

पाठचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ-योजनाओं पर चर्चाएँ होती रही हैं। पाठचर्या एवं पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए पाठ-योजना की जरूरत पर भी बल दिया जाता रहा है। किसी भी कार्य को करने के लिए योजना की जरूरत होती है। प्रत्येक पाठ का एक उद्देश्य होता है। हर पाठ में बच्चों के लिए कुछ दक्षता निहित होती है। शिक्षक को उद्देश्य ज्ञात होना चाहिए क्योंकि लक्ष्य का पता हो तो रास्ता ढूँढ़ना आसान होता है।

बिहार पाठचर्या की रूप-रेखा-2008 के अनुसार, ''बच्चे अनुभव के जरिए, कुछ बनाते और करते हुए, प्रयोग करते, पढ़ते, बहस करते, पूछते, सुनते, सोचते और जवाब देते हुए तथा खुद को वाणी, गतिविधि तथा लेखन के जरिए अभिव्यक्त करते हुए सीखते हैं।'' अतः सिखाने के लिए आवश्यक है कि उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखा जाय। यह शिक्षण-संदर्शिका शिक्षकों के मार्गदर्शन हेतु है। इसमें प्रत्येक पाठ का उद्देश्य एवं बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को ध्यान में रखकर किए जाने वाले क्रिया-कलापों की चर्चा की गयी है।

परंपरागत पढ़ाई में शिक्षक पूरे वर्ग से एक साथ बातचीत करते हैं जबकि बच्चे अलग-अलग दक्षता स्तर के होते हैं। ऐसे में कुछ बच्चे सीखते हैं, कुछ कम सीखते हैं, कुछ बहुत कम सीखते हैं। किसी विषय-वस्तु को पढ़ाने से पहले उसका संदर्भ बनाना या उसकी भूमिका बनाना इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होती है कि यह बच्चों को वह संदर्भ उपलब्ध कराता है जिससे वे नये सिखाये या पढ़ाये जा रहे ज्ञान को अपने ज्ञान के मौजूदा स्तर से जोड़ते हुए आगे नया सीख पाएँ। बशर्ते यह काम ठीक से व बच्चों के स्तर को ध्यान में रखकर किया जाय। शिक्षकों को कुछ हद तक बच्चों को पाठ से जोड़ने वाली एक सार्थक बातचीत करना जरूरी है। कक्षा में पाठ की भूमिका बनाते हुए बोले गये वाक्य बच्चों के वश में न रहने वाले मन को विषय से जोड़ता है। परन्तु, हमारा उद्देश्य यहाँ पूरा नहीं होता, यहाँ समूह-कार्य की आवश्यकता महसूस होती है।

समूह में बच्चे अपने दोस्तों से सीखते हैं। एक दूसरे से ज्यादा खुलते हैं। हम बच्चों को आपस में बातचीत कर सीखने का मौका नहीं देते। शिक्षक का ऐसा मान लेना कि वही सिखाने वाले हैं, गलत है। वास्तव में प्रत्येक बच्चा किसी शिक्षक के वनिस्पत हम उम्र साथियों से ज्यादा सीखता है। साथियों के साथ प्रश्न पूछने की आजादी तथा सरलता से तथा दोस्ताना माहौल में सीखने का मौका मिलता है। सहभागिता की भावना का विकास होता है। बच्चे वर्ग में शिक्षक द्वारा बतायी गयी बातों को जब समूह में एक दूसरे की सहायता से करते हैं तो समझ सुदृढ़ होती है।

सीखी हुई बातों का उपयोग जीवन में कर पाना ही सीखने की उपयोगिता है। बच्चे जब खुद करके सीखेंगे तो उनका आत्मबल बढ़ेगा, अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ेगी और तभी सीखी हुई बातों का उपयोग जीवन में कर सकेंगे। अतः सिखाने की प्रक्रिया में व्यक्तिगत कार्य आवश्यक हो जाता है। व्यक्तिगत रूप से काम करने से बच्चा अपने अनुभवों को व्यवस्थित कर सकता है। शिक्षकों को चाहिए कि बच्चों को प्रश्न करने का ज्यादा मौका दें। स्वाध्याय करने तथा मूल्यांकन दोनों ही कामों के लिए व्यक्तिगत कार्य किया जा सकता है। व्यक्तिगत कार्य की सफलता तभी है जब प्रत्येक बच्चे के द्वारा किये गये काम को जाँचा जा सके। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि बच्चों को दिये जाने वाले कार्य चुनौतीपूर्ण हों। यह चुनौती न बहुत आसान हो, और न बहुत कठिन। चुनौतियाँ बच्चों के उत्साह को बनाये रखती हैं तथा उत्साह सीखने की प्रक्रिया को तीव्र करता है।

प्रत्येक शिक्षक को यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक बच्चा वर्ग-कक्ष में दिये गये अभ्यासों को तथा पाठ्य-पुस्तक के अंत में दिये गये लिखित एवं मौखिक अभ्यासों को करे तथा उन अभ्यासों की जाँच पूरे धैर्य के साथ की जाए ताकि बच्चों को

अगर कोई कठिनाई हो तो वह कठिनाई दूर की जा सके। बच्चे पूर्ण रूप से सीखें हैं या नहीं इसके लिए शिक्षक पाठ की पुनरावृत्ति करें । बच्चों से पाठ संबंधित बातें करें, पूछें एवं यह जानने की कोशिश ही नहीं करें वल्कि अवश्य जानें कि सभी बच्चे सीख गए हैं। नहीं सीख पाये बच्चों की पहचान करें एवं उनका पुनर्बलन करें।

बिहार की स्कूली शिक्षा हेतु एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित नयी पाठ्यपुस्तकें कुछ नया सोचने और करने को तथा खोजने को उत्प्रेरित करती हैं। अतः पाठों के अंत में दिए गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर सिर्फ उस पाठ से नहीं खोजे जा सकते वल्कि इन्हें खोजने व उत्तर पाने के लिए कई बार पाठ्यपुस्तक और स्कूल की परिधि से बाहर जाना होगा। पुरानी एवं नयी पाठ्यपुस्तकों में यह एक बड़ा फर्क है। ऐसे में शिक्षक-शिक्षिकाओं को नये नज़रिये के साथ इन पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना-पढ़ाना चाहिए।

शिक्षक प्रस्तावित क्रिया-कलाप में प्रत्येक गतिविधि समूह से, पाठ पर अपनी समझदारी के अनुसार, जोड़-घटा सकते हैं। आपने पंचतंत्र का नाम अवश्य सुना होगा। एक राजा को चिंता थी कि उसके राजकुमार पढ़ते नहीं हैं। कई गुरु बुलाये गये परन्तु वे सारे के सारे चंचल राजकुमार के सामने असफल साबित हुए। बाद में पंडित विष्णुशर्मा को बुलाया गया। उन्होंने राजकुमार को पोथियों से नहीं, बल्कि कहानियों से शिक्षा देनी शुरू की। उनके किस्सों में नीरसता नहीं थी और प्रत्येक कहानी के पीछे एक संदेश छिपा होता था। कल तक के उदंड राजकुमार अब इनमें रस लेने लगे और उस योग्यता को हासिल कर सके, जिसकी उनसे उम्मीद थी। इन्हीं कहानियों का संग्रह 'पंचतंत्र' कहलाता है। आज भी ये कहानियाँ बच्चे सुनते हैं और उनसे बहुत कुछ सीखते हैं। ऐसा कहने का तात्पर्य है कि यह स्थापित हो गया है कि हमारी बुद्धि, हमारे अनुभव एवं सूझ-बूझ के इस्तेमाल करने का प्रतिफल है। कोई भी नई बात हम अपनी पूर्व जानकारी के बाद सीखते हैं। किसी भी वर्ग-कक्ष में बच्चों के सामान्य अनुभव पर आधारित बातचीत के आधार पर ही नयी जानकारी दें तथा ज्ञान के सृजन हेतु माहौल बनायें। बच्चों की सामान्य बुद्धि/अनुभव पर आधारित क्रिया-कलाप, बच्चों के बुद्धि के विकास में सहायक होंगे। हमारा उद्देश्य बच्चों की पढ़ने में अभिरुचि पैदा कराना होना चाहिए। इसलिए शिक्षक अपने बुद्धि-विवेक से इस शिक्षण सहयोग संदर्शिका में सुधार कर सकते हैं।

अतः शिक्षक प्रस्तावित क्रिया-कलाप में से गतिविधि आधारित बच्चों के निर्णय लेने की क्षमता का सम्मान करते हुए पाठ पर अपनी समझदारी के अनुसार जोड़-घटा सकते हैं। प्रत्येक गतिविधि के बाद अपना एवं बच्चों का मूल्याँकन जरूर करें। इसके आधार पर हर पाठ के बाद दी गई तालिका को भरना होगा। यह संदर्शिका केवल एक मार्गदर्शन है। अतः शिक्षकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। राज्य के सभी प्रारंभिक विद्यालयों में विद्यार्थी प्रगति-पत्रक का संधारण सुनिश्चित करने का निर्णय शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा लिया गया है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए कक्षावार-विषयवार पूरे वर्ष में प्रत्येक चार माह पर इस प्रगति-पत्रक को भरना अनिवार्य है। यह प्रगति-पत्रक प्रत्येक बच्चे की शैक्षिक और सह-शैक्षिक उपलब्धियों का दर्पण होगा। अतः इस संदर्शिका में संबद्ध अंश भी दिया जा रहा है। अपेक्षा है कि मूल्यांकन की योजना बनाते समय आप इस प्रगति-पत्रक को अवश्य ध्यान में रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित

अकादमिक संयोजक दल

अनुक्रमणिका

पाठ संख्या	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या
पाठ – 1	याद तुम्हारी आती है	1
पाठ – 2	चार मित्र	3
पाठ – 3	घर प्यारा	5
पाठ – 4	बिल्ली का पंजा	7
पाठ – 5	घाघ भड्डरी	9
पाठ – 6	सेर को सवा सेर	10
पाठ – 7	सीखो	12
पाठ – 8	सुनीता की पहिया कुर्सी	14
पाठ – 9	हमारा आहार	16
पाठ – 10	तीन बुद्धिमान	18
पाठ – 11	टेसू राजा	20
पाठ – 12	ऐसे थे बापू	21
पाठ – 13	चाचा का पत्र	23
पाठ – 14	बिजूका	25
पाठ – 15	शूलपाणि	26
पाठ – 16	साहसी ऋचा	27
पाठ – 17	बल्ब	28
पाठ – 18	बौना हुआ पहाड़	29
पाठ – 19	सुबह	31
पाठ – 20	पत्तियों का चिड़ियाघर	32
पाठ – 21	बरगद का पेड़	33

पाठ - 1 : याद तुम्हारी आती है

उद्देश्य

- कविता का सस्वर लयात्मक वाचन करने की क्षमता का विकास करना।
- अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख पाने की क्षमता का विकास करना।
- पाठ में आयी वस्तुओं/जीवों, जैसे–चिड़िया, फूल, पेड़, बिजली, बच्चे, बस्ता आदि पर कविता लिख सकने की क्षमता विकसित करना।
- दूसरों के विचारों को समझने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने के अधिकाधिक अवसर उपलब्ध कराना।
- प्रश्नों के जवाब लिखने की क्षमता का विकास करना।
- कविता का अर्थ सरल वाक्यों में व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पूछें कि उन्हें भगवान की याद कब–कब आती है ?
- बच्चों से पूछें–सुबह उठकर वे क्या–क्या करते हैं ? बच्चे जो बातचीत करें उसकी मुख्य बातों को बच्चों से श्यामपट पर लिखवायें। तब उसे बच्चों से पढ़वायें और वर्तनी को सुधारें।
- कविता की विषय–वस्तु पर बातचीत करें।
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कविता को पढ़कर सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- बच्चों के द्वारा चुने गए कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ का अंदाज़ लगाने को कहें और उन्हें श्यामपट पर लिखें। बच्चों के अंदाज़ के आधार पर शब्द के अर्थ तक पहुँचने में उनकी मदद करें।
- बच्चों से कठिन शब्दों का समानार्थी शब्द श्यामपट पर लिखवायें। उन्हें काग़ज़ पर बच्चों से उतरवा कर कक्षा में प्रदर्शित भी करायें।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनाकर पाठ में आयी वस्तुओं/जीवों जैसे–चिड़िया, फल, पेड़, बिजली, बच्चे, बस्ता इत्यादि पर कविता बनाने को कहें तथा उनकी बनायी कविता को सुनने–सुनाने का वातावरण बनाकर पर्याप्त अवसर दें।
- बच्चों के समूह बनाकर कविता के एक–एक अनुच्छेद को अलग लय में तैयार करने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह को नयी लय में कविता सुनाने का मौका दें।
- चार–पाँच समूह बनायें। हर समूह को पुर्जे पर कुछ दृश्य लिखकर दें, जैसे– बारिश का दिन, पहाड़ों का दृश्य, रेगिस्तान में एक पेड़, समुद्र का किनारा, जंगल में जानवर इत्यादि। हर समूह को उस पर लिखने और चित्र बनाने को कहें और फिर बारी–बारी से प्रत्येक समूह से उन दृश्यों का वर्णन करने को कहें।
- प्रत्येक समूह को पाठ से कुछ शब्द चुनने के लिए कहें। चुने गए शब्दों के उच्चारण करवायें। दूसरे समूह से पूछें बच्चों ने सही उच्चारण किया या नहीं। गलत उच्चारण की स्थिति में मानक उच्चारण करायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को मन—ही—मन पढ़ने को कहें।
- पाठ को बोलकर पढ़ने को कहें। शब्दों का उच्चारण करवायें तथा वर्तनी में सुधार करवायें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर शब्दकोश से उनके अर्थ ढूँढ़ने को कहें। अर्थ ढूँढ़ने में आवश्यकतानुसार उनकी मदद करें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद शब्द एवं शब्दार्थ लिखवायें।
- पाठ को देखकर पाँच पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- पाठ में आये किसी भी शब्द, जैसे— आसमान, वर्षा, पतझड़, सुबह इत्यादि पर दस वाक्य लिखने को कहें।

पुनरावृति

- बच्चों से कविता सस्वर सुनें।
- शर्मीले बच्चों से पाठ के छोटे—छोटे अनुच्छेद को लय से पढ़ने को कहें।
- बच्चों को वाक्य सुनकर लिखने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या—क्या सीखा						
बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो किसी भी विषय पर खुद से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपने से कविता लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दूसरों के सरल विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कठिन शब्दों को सुनकर लिख सकते हैं।

पाठ - 2 : चार मित्र

उद्देश्य

- कहानियों को पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- कहानी के पात्र/घटना में बदलाव के बाद बदली हुई परिस्थिति में कहानी लिखने हेतु प्रोत्साहित करना।
- कहानी से जुड़े प्रश्नों का जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- कहानी से जुड़े प्रश्नों का जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- गुण बताने वाले शब्दों की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- चार मित्रों की कहानी संक्षेप में सुनायें।
- शिक्षक मानक उच्चारण एवं हाव–भाव से कहानी को पढ़कर सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- बच्चों को हाव–भाव के साथ कहानी सुनाने के लिए कहें।
- कहानी की घटना में बदलाव लाकर बदली हुई परिस्थिति में बच्चों को कहानी गढ़ने को अवसर दें।
- बच्चों के द्वारा चुने गये कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखवायें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ का अंदाज़ लगाने को कहें और उन्हें भी श्यामपट पर लिखवायें। बच्चों को अंदाज़ के आधार पर शब्द के अर्थ तक पहुँचने में उनकी मदद करें।
- कठिन शब्दों के समान/विपरीत अर्थ वाले शब्दों की सूची बनवायें।
- बतायें, गुण बताने वाले शब्द को 'विशेषण कहते हैं'। पाठ से विशेषण शब्दों की सूची बनवायें।

समूह–कार्य

- समूह में पाठ में आये उन शब्दों की सूची बनवायें जो किसी के गुण का बोध करवाते हों। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों से इस सूची की प्रस्तुति करायें।
- समूह बनाकर पाठ के अभ्यास में ''क्या होता अगर'' एवं ''आपकी कहानी'' शीर्षक के अन्तर्गत दी गई परिस्थितियों के अनुसार कहानी बनवायें तथा सुनाने का मौका दें।
- अभ्यास के अन्तर्गत दिये गये सवालों के हल समूह में लिखित रूप से करने के लिए कहें।
- प्रत्येक समूह को कहानी हाव–भाव के साथ सुनाने को कहें। बाद में इसकी प्रस्तुति नाटक के रूप में करायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ का मौन वाचन करायें।
- फिर, पाठ को बोल–बोलकर पढ़ने के लिए कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आनेवाले शब्दों को लिखकर शब्दकोश या शिक्षक की मदद से उनके अर्थ खोजने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें।
- पाठ में से पाँच पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- बच्चों को अपने मित्रों के नामों की सूची बनाने को कहें।
- अपने किसी एक मित्र के बारे में लिखने को कहें।

- बच्चों से कहानी संक्षेप में हाव–भाव के साथ सुनाने के लिए कहें।
- बच्चों से कहानी को संक्षेप में लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को समझ के आधार पर एक पंक्ति के बाद दूसरी पंक्ति बोलते हुए कहानी को पूरा करने को कहें।
- संक्षेप में लिखी हुई कहानी को दो–तीन बच्चों से पढ़कर सुनाने के लिए कहें।
- शर्मीले बच्चों को सामने बुलाकर पाठ के एक–एक अनुच्छेद को हाव–भाव के साथ से पढ़ने के लिए कहें।
- शिक्षक बच्चों से कुछ 'विशेषण' शब्दों को लिखने के लिए कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा

बच्चों की संख्या, जो गुण वाले शब्दों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो खुद से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो खुद से कहानी लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दूसरों के सरल विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब मौखिक दे सकते हैं।

पाठ - 3 : घर प्यारा

उद्देश्य

- कविता का सस्वर एवं लयात्मक वाचन करने की क्षमता का विकास करना।
- अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से लिखने की क्षमता विकसित करना।
- परिचित संदर्भ के संबंध में बातचीत करने की क्षमता विकसित करना।
- कविता लिख सकने हेतु प्रोत्साहित करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझने की क्षमता विकसित करना।
- पाठ के प्रश्नों का जवाब मौखिक एवं लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- संयुक्ताक्षर वाले शब्दों को लिख सकने की क्षमता का विकास करना।
- क्रिया–सूचक शब्दों के विभिन्न रूपों की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से बातचीत कर पता करें कि उनके घर में कौन–कौन से जंतु क्या–क्या करते हैं ?
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कविता सुनायें।
- कविता को छोटे–छोटे खण्डों में बाँटकर उनका बच्चों से लयात्मक गायन अपने साथ–साथ करायें।
- बच्चों को कविता के स्वतंत्र पठन हेतु अवसर दें।
- बच्चों द्वारा चुने गये कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। बच्चों को शब्दों के अर्थ का अंदाज़ लगाने को कहें। उनके अंदाज़ को श्यामपट पर लिखें। बच्चों के अंदाज़ के आधार पर शब्द के अर्थ तक पहुँचने में उनकी मदद करें।
- बच्चों से कविता में आये क्रिया–सूचक शब्दों की सूची बनवायें।

समूह–कार्य

- समूह में बच्चों को पाठ्यपुस्तक से अलग–अलग कहानी दें तथा उनमें आये संयुक्ताक्षर वाले शब्दों की सूची बनवायें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को लिखे हुए शब्दों को पढ़ने का मौका दें।
- चार–पाँच समूहों में बच्चों को कविता की चार–चार पंक्तियाँ देकर उन्हें सरल वाक्यों में लिखने को कहें।
- समूहों में बच्चों को कविता के एक–एक अनुच्छेद देकर उनकी नयी लय बनाने के लिए कहें। प्रत्येक समूह को नयी लय में गाने को कहें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- बच्चों को पाँच समूहों में बाँटकर पृष्ठ 10 के अभ्यास 3 में दिये गये क्रियासूचक एक–एक शब्द देकर उनके विभिन्न रूपों से युक्त वाक्य बनाने को कहें, जैसे–पकड़ना शब्द से पकड़ों, पकड़े, पकड़ने, पकड़ा इत्यादि शब्द बनाये जा सकते है तथा इनका वाक्य में अलग–अलग प्रयोग किया जा सकता है।
- विशेषण, क्रिया, संज्ञा और सर्वनाम वाले कुछ शब्दों के विभिन्न पाठों से चुनाव करायें तथा वाक्य बनवायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ का मौन वाचन करायें।
- फिर, पाठ की कुछ पंक्तियाँ बोल–बोलकर पढ़ने के लिए कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखने को कहें। इन शब्दों के अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़ने कहें। इसमें आवश्यकतानुसार मदद करें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचे।
- पाठ को देखकर पाँच पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- शर्मीले बच्चों को सामने बुलाकर पाठ के एक–एक अनुच्छेद को लय से पढ़ने के लिए कहें।
- अपने घर के बारे में कुछ वाक्य लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- कुछ बच्चों से कविता लय में पढ़कर सुनाने को कहें।
- वाक्य में से क्रिया, संज्ञा और सर्वनाम छाँटने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा						
बच्चों की संख्या, जो क्रिया वाले शब्दों की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपने अनुभवों को लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी कविता लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कविता के अर्थ को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संयुक्ताक्षर वाले शब्दों को सुनकर लिख सकते हैं।

पाठ - 4 : बिल्ली का पंजा

उद्देश्य

- अनुभवों / विचारों को अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकने की क्षमता विकसित करना।
- कहानी लिख सकने हेतु प्रोत्साहित करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझने की क्षमता विकसित करना।
- पाठ के प्रश्नों का जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- पाठ के प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- 'र' के साथ 'उ' तथा 'ऊ' का मात्रा लगाने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से चूहे और बिल्ली से होने वाले नुकसान के बारे में बात करें।
- शिक्षक मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ कहानी को पढ़कर सुनायें तथा बच्चों से पढ़वायें।
- अब, बच्चों को ''बिल्ली का पंजा'' कहानी संक्षेप में सुनाने को कहें।
- बच्चों के द्वारा चुने गये कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखवायें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ पर अंदाज लगाने को कहें। उनके अंदाज़ को श्यामपट पर लिखें। बच्चों के अंदाज़ के आधार पर शब्दों के अर्थ तक पहुँचने में उनकी मदद करें।
- बच्चों की बातों को धैर्यपूर्वक सुनें।
- बच्चों की मदद से उन शब्दों की सूची बनवायें जिनमें ''रु'' या ''रू'' का प्रयोग हो।

समूह–कार्य

- चार–पाँच समूह बनायें। चूहे और हाथी या चूहे और शेर से संबंधित कहानी सोचकर या पूर्व में पढ़ी हुई, समूह में सुनाने को कहें। बच्चों से समूह में सुनायी गयी कहानी को चार्ट–पेपर पर लिखवाकर कक्षा में प्रदर्शित करवायें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को कहानी पढ़कर सुनाने के लिए कहें।
- चार–पाँच समूह बनाकर बच्चों को सोचने का मौका दें कि खाज / खुजली क्यों होती है। ऐसा होने पर क्या–क्या कर सकते हैं। लिखने के लिए भी कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को बोलने / पढ़ने का मौका दें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- बच्चों को समूह में कुछ शब्द दें और वाक्य बनवायें।
- बच्चों को आधी–अधूरी कहानी समूह में उपलब्ध करायें और कहानी को बच्चों से पूरा कराकर लिखित रूप से प्रदर्शित करायें।
- अगर चूहे को सात पूँछ हो, तो क्या होगा ? समूह में बोलने और लिखने को कहें।
- समूह में बच्चों को कहानी की किताब उपलब्ध करायें और संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया वाले शब्दों की सूची बनवायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को मन–ही–मन पढ़ने को कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर शब्दकोश में उनके अर्थ ढूँढ़ने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद उनके श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें।
- 'रु' तथा 'रू' के प्रयोग वाले निम्नलिखित शब्दों के श्रुतिलेख लिखवायें।

'रु' वाले शब्द

रुई, रुकावट, रुग्ण, रुचि, रुतबा, रुद्राक्ष
रुधिर, रुनझुन, रुपया, रुपहला, रुलाई
रुष्ट, गरुड़, तरु, तरुण, पुरुष, मारुति, मरुभूमि

'रू' वाले शब्द

रूखा, रूठना, रूप, रूपा, रूमाल, रूह
गुरूर, जरूर, जरूरत, बारूद, शुरू, आरूढ़
शुरूआत

- पाठ को देखकर पाँच पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- बच्चों से कहानी को संक्षेप में लिखने को कहें।
- कहानी के संवादों को बोलने के लिए कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को क्रमशः एक पंक्ति के बाद दूसरी पंक्ति बोलते हुए कहानी को पूरा करने के लिए कहें।
- दो या तीन बच्चों से संक्षेप में लिखी हुई कहानी पढ़कर सुनाने को कहें।
- शर्मीले बच्चों को सामने बुलाकर पाठ के एक–एक अनुच्छेद को हाव–भाव के साथ पढ़ने के लिए कहें।
- बच्चों से नई कहानियाँ सुनें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा

बच्चों की संख्या, जो अनुभवों/विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो खुद से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दूसरों के सरल विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो 'रु' या ''रू'' से युक्त शब्दों को सुनकर सही–सही लिख सकते हैं।

पाठ - 5 : घाघ भड्डरी

उद्देश्य

- प्रचलित लोकगीत और लोककथाओं से परिचय कराना।
- लोकगीतों का सस्वर एवं लयात्मक गायन कराना।

शिक्षण–निर्देश

- पाठ के दोहों को एक–एक कर लय से पढ़ें, फिर दिये गये शब्दार्थ को उदाहरण के साथ सरल शब्दों में व्यक्त करें।
- बच्चों को पाठ के स्वतंत्र पठन का अवसर दें।
- ऐसी अन्य कविता और कहानी शिक्षक ढूँढ़ कर लायें और बच्चों को सुनायें।

समूह–कार्य

- बच्चों से इस कविता पर सवाल बनाने को कहें।
- बच्चों के पाँच समूह बनायें। तीन समूहों को एक–एक लोकगीत एवं दो समूहों को एक–एक लोककथा अपने शिक्षकों या अन्य लोगों के सहयोग से पता कर लिखने एवं सुनाने को कहें।
- कविता में आये परिचित शब्दों से संबंधित बातचीत करें।

व्यक्तिगत कार्य

- सुन्दर लिपि में रंग–बिरंगे कलम से पूरी कविता को लिखवायें।
- वर्षा ऋतु पर चित्रकारी करवायें।
- बच्चों से अन्य ऋतुओं पर या घटनाओं पर कविता लिखवायें एवं गाने को कहें।
- अपने अभिभावकों/ग्रामीणों से पूछकर 'घाघ' के कुछ वचनों का संग्रह करने हेतु बच्चों से कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से कविता को सुनें।
- बच्चों से कविता पर सवाल पूछें।

पाठ - 6 : सेर का सवा सेर

उद्देश्य

- अनुभवों को अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकने की क्षमता विकसित करना।
- कहानी लिख सकने हेतु प्रोत्साहित करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने हेतु क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने हेतु क्षमता विकसित करना।
- शब्द–भंडार बढ़ाना।
- एकांकी का परिचय देना।

पाठ–परिचय

- मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ कहानी को पढ़कर सुनायें तथा बच्चों से भी पढ़वायें।
- बच्चों के द्वारा चुने गये कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखवायें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ पर अंदाज़ लगाने को कहें। उनके अंदाज़ को श्यामपट पर लिखें। बच्चों के अंदाज़ के आधार पर शब्द के अर्थ तक पहुँचने में उनकी मदद करें।
- बच्चों से संक्षेप में कहानी सुनें।
- शिक्षक बच्चों को नई कहानी सुनायें।

समूह–कार्य

- चार–पाँच समूह बनायें। प्रत्येक समूह को एक गप्प लिखने को कहें तथा समूह के 2 या 3 बच्चों से हाव–भाव के साथ उसे सुनें।
- विद्यालय पुस्तकालय के लिए खरीदी गई किताबों में से अपनी पसंद की कहानी चुनने को कहें एवं समूह के दो–तीन बच्चों से हाव–भाव के साथ सुनें।
- अभ्यास के सवालों पर चर्चा करें तथा कहानी का मंचन करायें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में बातचीत कर के लिखने को कहें।
- समूह में बच्चों को पाठ्यपुस्तक की पृ० सं० 20 के अभ्यास 8 में दिये गये सभी शब्दों के समानार्थक शब्दों की सूची बनाने को कहें।
- बच्चों के उपयुक्ति समूहों में, एक समूह को संज्ञा, दूसरे को सर्वनाम, तीसरे को विशेषण तथा चौथे समूह को क्रिया शब्द दिये गये पाठों से चुनने को कहें और प्रस्तुति करायें। ये पाठ पुस्तकालय की किताबों से भी हो सकते हैं।
- अब, बड़े समूह में कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखवायें तथा गलत होने पर बच्चों से शब्दों को ठीक करवायें।

व्यक्तिगत कार्य

- बच्चों से पाठ का मौन वाचन करवायें।
- पाठ को बारी–बारी से बोल–बोलकर पढ़ने के लिए कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर शब्दकोश की मदद से उनके अर्थ खोजने को कहें।

- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें।
- पाठ को देखकर पाँच पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- बच्चों से कहानी संक्षेप में लिखने को कहें।
- कहानी में आये संवादों को बोलने के लिए कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को क्रमशः एक पंक्ति के बाद दूसरी पंक्ति बोलते हुए कहानी को पूरा करने को कहें।
- दो या तीन बच्चों से संक्षेप में लिखी हुई कहानी पढ़कर सुनाने को कहें।
- बच्चों से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया वाले शब्द बताने को कहें।
- बच्चों से विपरीतार्थक एवं समानार्थक शब्द बताने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा						
बच्चों की संख्या, जो क्रिया और विशेषण वाले शब्दों का उपयोग कर वाक्य बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संज्ञा और सर्वनाम वाले शब्दों का उपयोग कर वाक्य बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दूसरों के सरल विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो समानार्थक/विपरीतार्थक शब्दों को लिख सकते हैं।

पाठ - 7 : सीखो

उद्देश्य

- कविता का सस्वर एवं लयात्मक वाचन करने की क्षमता विकसित करना।
- समान अर्थ वाले शब्दों को समझने की क्षमता विकसित करना।
- अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त करने की समझ विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिखने हेतु प्रोत्साहित करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना
- शब्द–भंडार बढ़ाना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से जानें, उन्होंने किस–किस मित्र से क्या–क्या सीखा है।
- पाठ के आधार पर बतायें, किससे क्या सीखा जा सकता है।
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कविता को पढ़कर सुनायें और बच्चों से सुनें।
- बच्चों के द्वारा चुने गये कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखवायें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ पर अंदाज़ लगाने को कहें। उनके अंदाज़ को श्यामपट पर लिखवायें तथा सही अर्थ तक पहुँचने में उनकी मदद करें।
- समान अर्थ वाले शब्दों की सूची श्यामपट पर बनवायें।

समूह–कार्य

- बच्चों के चार समूह बनाकर बातचीत करने को कहें –प्रकृति में उपलब्ध जानवर, पौधा, पक्षी, वस्तुओं से क्या–क्या सीख सकते हैं, उसकी सूची बनायें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के बच्चों को लिखी हुई बातों को पढ़ने का मौका दें।
- चार–पाँच समूहों से कविता पढ़कर मतलब लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को लिखे हुए को पढ़ने का मौका दें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- पाठ्यपुस्तक से किन्हीं एक या दो पाठ से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया, शब्दों की सूची बनवायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को मन–ही–मन पढ़ने को कहें।
- पाठ को बारी–बारी से बोलकर पढ़ने को कहें तथा उच्चारण ठीक करवायें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर शब्दकोश से उनके अर्थ ढूँढ़ने को कहें।
- कठिन शब्दों का श्रुतिलेख लिखवायें एवं उसकी जाँच करें।
- पाठ को देखकर पाँच पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- अपने मित्र के बारे में दो पंक्तियों की एक कविता लिखने को कहें तथा उनकी बनायी कविताओं को सुनने–सुनाने का पर्याप्त अवसर दें। उनकी त्रुटियों को उभारने की बजाय उनके प्रयास की सराहना करें।

- बच्चों को शब्द दें और वाक्य बनवायें ; जैसे–पुस्तक, पक्षी, इत्यादि।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से कविता को लय में सुनाने को कहें।
- बच्चों से शब्दों के वाक्य बनवायें।
- बच्चों से परिचित जीव, जंतुओं एवं वस्तुओं के बारे में मौखिक रूप से बताने के लिए कहें।
- परिचित वस्तुओं, व्यक्तियों, जीवों के संबंध में कुछ पंक्तियाँ लिख कर दिखाने के लिए कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दूसरों के सरल विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सर्वनाम वाले शब्दों को समझ सकते हैं।

पाठ - 8 : सुनीता की पहियाकुर्सी

उद्देश्य

- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण की समझ विकसित करना।
- अनुभवों को अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकने हेतु प्रोत्साहित करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझ कर पत्र में लिखकर अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक देने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित देने की क्षमता विकसित करना।
- स्त्रीलिंग–पुल्लिंग की समझ विकसित करना।
- वचन की समझ विकसित करना।
- सुनने में लगभग समान शब्दों के बीच के अन्तर को समझना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पूछें कि शारीरिक रूप से निःशक्त बच्चे क्या–क्या कर सकते हैं। शारीरिक रूप से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सक्षमता के बारे में उनके अनुभव सुनें। ध्यान रहे यह एक संवेदनशील मुद्दा है और इस पर धैर्य से बातचीत होनी चाहिए।
- पाठ के आधार पर सुनीता की कहानी संक्षेप में सुनायें।
- शिक्षक मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ कहानी को पढ़कर सुनायें।
- बच्चों से क्रमशः कहानी बोलकर पढ़वायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखवायें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ पर अंदाज़ लगाने को कहें। इसके बाद इसका अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़कर मिलान करने के लिए कहें।

समूह–कार्य

- बच्चों को चार समूह बनाकर अलग–अलग तरह की शारीरिक रूप से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ कैसे सहयोग करेंगे, इस पर बातचीत करने को कहें। बच्चों को अपनी बातचीत की मुख्य बातों को चार्ट–पेपर पर लिखकर कक्षा में प्रदर्शित करने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को लिखी हुई बातों को पढ़ने का मौका दें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में बातचीत करके लिखने को कहें।
- बच्चों को कहानी में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण वाले शब्दों का चयन कर सूची बनाने को कहें।
- बच्चों के चार समूह बनाकर उन्हें पाठ्यपुस्तक की पृ.सं. 29 के अभ्यास 3 मे दिये गये शब्द–युग्मों के अनुरूप अन्य पाँच–पाँच शब्द–युग्म बनाने को कहें।
- हर समूह को, कहानी से दस–दस शब्दों का चयन कर उनके लिंग–निर्णय करने को कहें।
- हर समूह में कुछ शब्द देकर एकवचन और बहुवचन शब्दों की सूची बनाने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को मन–ही–मन पढ़ने को कहें।

- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर शब्दकोश में उनके अर्थ ढूढ़ने को कहें।
- कठिन शब्दों का अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँच करें।
- पाठ को देखकर पाँच पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- बच्चों से कहानी को संक्षेप में लिखने को कहें।
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण शब्दों से वाक्य बनाने को कहें।
- दस पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग लिखने को दें।
- दस एकवचन शब्दों के बहुवचन लिखने को दें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से कहानी संक्षेप में सुनें।
- शब्दों के वचन बच्चों से पूछें।
- शब्दों के लिंग बच्चों से पूछें।

कितने बच्चों ने क्या—क्या सीखा						
बच्चों की संख्या, जो संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण वाले शब्दों का उपयोग कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो विचारों को पत्र लिखकर अभिव्यक्त सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो लगभग समान ध्वनिवाले शब्दों के बीच के अन्तर समझ पाते हैं।

बच्चों की संख्या, जो एकवचन एवं बहुवचन को समझ पाते है।	बच्चों की संख्या, जो स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग शब्दों को समझ सकते है।

पाठ - 9 : हमारा आहार

उद्देश्य

- कविता का सस्वर एवं लयात्मक वाचन करना।
- अनुभवों को पत्र में लिखकर अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकने हेतु प्रोत्साहित करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझ सकने की क्षमता विकसित करना
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों का जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- समान अर्थ वाले शब्द तथा सहचर शब्द बताना।
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- पाठ में दिये गये चित्रों के बारे में बच्चों से उनका स्थानीय नाम पूछें।
- बच्चों से पता करें – वे क्या–क्या खाते–पीते हैं। इसके लिए हर बच्चे से चौकोर कागज पर अपना नाम और खाने में क्या पसंद है लिखने को कहें और उसे कक्षा में प्रदर्शित करें।
- पाठ के आधार पर खानेवाली वस्तुओं के गुण के बारे में बतायें ।
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कविता को पढ़कर सुनायें।
- बच्चों से कविता पढ़कर सुनाने कहें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखवायें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ पर अंदाज़ लगाने को कहें। शब्दकोश से इनके अर्थ ढूँढ़कर मिलान करने के लिए कहें।
- बच्चों को पत्र लिखने के नियम बतायें।
- बच्चों को सहचर शब्द के बारे में बतायें।

समूह–कार्य

- बच्चों के चार समूह बनायें। दो समूहों को फलों के एवं दो समूहों को सब्जियों के नाम की सूची बनाने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को लिखे गए नामों को पढ़ने का मौका दें।
- समूह में बातचीत कर लिखने को कहें कि खाना क्यों जरूरी है। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों द्वारा लिखी गयी बातों को सुनें।
- अब, समूहों से कविता पढ़कर मतलब लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को लिखे हुए अर्थ को पढ़ने का मौका दें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में बातचीत करके लिखने को कहें।
- पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ 35 पर भाषा की बात (1) के अन्तर्गत सहचर शब्द के विभिन्न रूपों की जानकारी बच्चों को दें तथा बच्चों के समूह बनाकर उन्हें अन्य दस सहचर शब्द बनाने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ का मौन वाचन करायें।

- अर्थ समझ में नहीं आनेवाले शब्दों को लिखकर शब्दकोश में उनके अर्थ ढूँढ़ने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें।
- फलों या सब्जियों पर चार–पाँच वाक्य लिखने को कहें।
- बच्चों को अपने दोस्त, नाना–नानी, दादा–दादी को पत्र लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से पाठ के आधार पर खाने से होनेवाले लाभों को सुनें।
- क्या–क्या खाने से क्या–क्या लाभ होता है, पूछें।
- बच्चों से पत्र लिखने के नियम पूछें।

<table>
<tr><th colspan="6">कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा</th></tr>
<tr><td>बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को पत्र में लिखकर अभिव्यक्त कर सकते हैं।</td><td>बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।</td><td>बच्चों की संख्या, जो दूसरों के सरल विचारों को समझ सकते हैं।</td><td>बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।</td><td>बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।</td><td>बच्चों की संख्या, जो वाक्यों में संज्ञा एवं क्रिया शब्दों को पहचान कर लिख सकते हैं।</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>बच्चों की संख्या, जो सहचर शब्द का मतलब समझते है।</td></tr>
<tr><td></td></tr>
</table>

पाठ - 10 : तीन बुद्धिमान

उद्देश्य

- अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त करने की समझ विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकने हेतु प्रोत्साहित करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझ सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- ''काल'' के संबंध में समझ विकसित करना।
- ''वचन'' के संबंध में समझ विकसित करना।
- वाक्य में कारक चिह्नों के प्रयोग की समझ विकसित करना।
- एकांकी के संवाद लिखने तथा अभिनय करने को बढ़ावा देना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों को ऊँट के बारे में अपने अनुभव बताने को कहें।
- शिक्षक बच्चों को पाठ संक्षेप में बतायें।
- शिक्षक मानक उच्चारण, एवं हाव–भाव के साथ एकांकी को पढ़कर सुनायें।
- बच्चों से फिल्मों के डायलॉग सुनें। फिर उसी अंदाज में उन्हें पाठ के संवाद सुनाने को कहें।
- बच्चों से कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखने को कहें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाने को कहें। उनके अनुमान को श्यामपट पर लिखवायें। शब्दकोश की सहायता से उनके अर्थ ढूँढ़ने एवं अनुमान से उसका मिलान करने कहें।
- श्यामपट पर वचन के नियम को उदाहरण देकर समझायें। जैसे– बच्चा–बच्चे, लड़की–लड़कियाँ, लड़का–लड़के इत्यादि।
- श्यामपट पर काल के सरल नियम को उदाहरण देकर समझायें, जैसे– मैं पढ़ता था। मैं पढ़ता हूँ। मैं पढ़ूँगा।
- कारक के चिह्नों का प्रयोग बतायें।

समूह–कार्य

- छः समूह बनायें। एकांकी को तीन खण्डों में बाँटकर एक–एक खण्ड पर दो–दो समूहों को मंचन करने की तैयारी करने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के द्वारा दृश्य का मंचन करवायें।
- पहले दिन समूह संख्या 1,3 तथा 5 एवं अगले दिन समूह संख्या 2,4 तथा 6 से पूरी एकांकी का पुनः मंचन करायें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- समूह में बच्चों से एकवचन और बहुवचन वाले शब्दों की सूची बनवायें।
- समूह में भूतकाल, भविष्यत् काल और वर्तमान काल वाले शब्दों की सूची बनवायें।
- कारक के विभिन्न चिह्नों का प्रयोग बताते हुए उनसे संबंधित वाक्यों का निर्माण कर चार्ट पेपर पर लिखकर प्रदर्शित करायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को देख कर मन–ही–मन पढ़ने को कहें।
- पाठ को हाव–भाव के साथ बोलकर पढ़ने के लिए कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर शब्दकोश से उनके अर्थ ढूँढ़ने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँच करें।
- बच्चों ने अगर कोई झाँकी या नाटक देखा हो, तो उसके बारे में बताने के लिए कहें।
- विभिन्न वाक्यों में आये कारक के चिह्नों की पहचान करने के लिए कहें तथा उसकी सूची बनवायें।
- बच्चों को शब्दों के वचन बदलने को दें।
- बच्चों को कुछ क्रियापद देकर तीनों कालों में उनके रूप लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- प्रत्येक पात्र के संवाद अलग–अलग बच्चों से पढ़कर हाव–भाव के साथ सुनाने के लिए कहें।
- बच्चों से काल और वचन से संबंधित सवाल पूछें।
- तीनों काल से संबंधित विभिन्न वाक्यों को लिखने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा

बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दूसरों के सरल विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो वाक्य को सुनकर काल के बारे में बता सकते हैं।

बच्चों की संख्या, जो वचन के बारे में समझते है	बच्चों की संख्या, जो वाक्य में सही कारक चिह्नों का प्रयोग करते है।	बच्चों की संख्या, जो एकांकी के संवाद लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अभिनय कर सकते हैं।

पाठ -11 : टेसू राजा

उद्देश्य

- कविता का सस्वर एवं क्रियात्मक वाचन करने की क्षमता का विकास करना।

शिक्षण–निर्देश

- पहले स्वयं कविता को लय एवं हाव–भाव के साथ पढ़ें।
- बच्चों से कविता को लय से पढ़वायें।
- शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर खाने–पीने की चीज बनायें, जैसे–
  - भूँजा जिसमें प्याज, टमाटर, खीरा, आदि मिला हों। कुछ बच्चों से प्याज, टमाटर कटवायें, कुछ को मिलाने का कार्य दें और कुछ को परोसने का कार्य दें। इसके अतिरिक्त अन्य खाने–पीने की चीजे भी बनवायें, जैसे–
  - सत्तू का शरबत
  - नींबू का शरबत
  - आम का शरबत
  - हरा सलाद, आदि।

समूह–कार्य

- पाठ में जिस व्यंजन को बनाने की बात की गई है बच्चों से समूह में उसकी चर्चा करने एवं लिखने को कहें।
- शिक्षक बच्चों के चार–पाँच समूह बनाकर उन्हें अलग–अलग व्यंजन बनाने की विधि लिखने को कहें।
- पुस्तक में दी गई कविताओं के पढ़ने की प्रतियोगिता विभिन्न समूहों में करवायें।
- पुनः, बच्चों के चार समूह बनाकर इस कविता को गद्य के रूप में लिखने को कहें। प्रत्येक समूह की बारी–बारी से प्रस्तुति करायें। विभिन्न समूहों द्वारा लिखें गए गद्य में अन्तर होने की स्थिति में सामान्य समझ बनाने का प्रयास करें।

व्यक्तिगत कार्य

- कविता के आधार पर चित्र बनाने को कहें।
- कविता में आये ''मैं'' शब्द को गिनकर लिखने को कहें।
- दही बड़ा बनाने की विधि पाठ के आधार पर लिखने एवं पढ़कर सुनाने को कहें।
- बच्चों को अलग–अलग अपनी पसंद की खाने की चीजों के बारे में लिखने के लिए कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से कविता सुनें।
- पाठ से आये कुछ शब्द देकर उनसे वाक्य बनवायें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो कविता को हाव–भाव के साथ सुना सकते है।	बच्चों की संख्या, जो व्यंजन बनाने की विधि के बारे में लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी पसंद की खाने की चीजों के बारे में लिख सकते है।	बच्चों की संख्या, जो अपनी बात वेझिझक कह सकते है।

पाठ - 12 : ऐसे थे बापू

उद्देश्य

- अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकने हेतु प्रोत्साहित करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझ सकने की क्षमता विकसित करना
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- एकवचन और बहुवचन वाले शब्दों के विषय में समझ विकसित करना ।
- पत्र लिखने की क्षमता विकसित करना।
- सर्वनाम की समझ विकसित करना।
- विशेषण की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पूछें कि उनके पिता/बापू क्या–क्या करते हैं।
- बच्चों से महात्मा गाँधी के बारे में जानकारी लें। पूछें कि गाँधी जी कौन थे, उनका जन्म कब और कहाँ हुआ था।
- शिक्षक बच्चों को पाठ संक्षेप में बतायें।
- शिक्षक मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ कहानी को पढ़कर सुनायें।
- बच्चों से भी बारी–बारी से कहानी का एक–एक अनुच्छेद पढ़वायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखवायें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाने को कहें। उनके अनुमान को श्यामपट पर लिखें तथा इनका मिलान शब्दकोश में दिए अर्थ से करवायें।
- बच्चों को पत्र लिखने के नियम सिखायें।
- पृष्ठ 49 पर भाषा की बात (1) के अन्तर्गत उदाहरण से सर्वनाम को समझायें।
- बच्चों को उदाहरण दें। एकवचन और बहुवचन समझायें, जैसे–एक लड़का–अनेक लड़के, एक किताब–अनेक किताबें, आदि।
- बच्चों को ''विशेषण'' अर्थात संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द के बारे में उदाहरण देकर समझायें, जैसे–छोटा लड़का, लाल कलम आदि।

समूह–कार्य

- चार–पाँच समूह बनायें। हर समूह को गाँधी जी से जुड़ी चीजों की सूची बनाने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को लिखी हुई सूची को पढ़ने का मौका दें।
- समूह में बच्चों को अपने मित्र के पास पत्र लिखने को कहें जिसमें गाँधी जी के बारे में लिखा हुआ हो।
- बच्चों को संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं विशेषण के बारे में बतायें। चार समूह बनायें। एक समूह को संज्ञा, दूसरे को सर्वनाम, तीसरे को क्रिया तथा चौथे को विशेषण शब्द चुनने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक–दो बच्चों को लिखे हुए शब्दों को बोलने का मौका दें। वैसे बच्चों को प्रस्तुति में आगे लाएँ, जो ज्यादा झिझकते हों।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में बातचीत करके लिखने को कहें।

- बच्चों को पुर्जे में एकवचन और बहुवचन वाले शब्द लिखकर दें और उनके मिलान करने को कहें। उन शब्दों को कॉपी में लिखवायें। यह अभ्यास नये शब्दों के साथ तब तक करायें जब तक बच्चों में इसकी स्पष्ट समझ का विकास न हो जाए।
- अखबार, पुरानी पुस्तक या कहानी की किताब समूह में देकर 20 शब्दों की सूची बनवायें और उनमें से एकवचन और बहुवचन वाले शब्दों को अलग–अलग श्यामपट पर लिखवायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को मन–ही–मन पढ़ने को कहें।
- बोलने में झिझक वाले बच्चों को पाठ का अनुच्छेद बोलकर पढ़ने को कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्द को लिखकर शब्दकोश में उनके अर्थ ढूँढ़ने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँच करें।
- बच्चों से लिखने को कहें कि वे वैसे कौन–कौन से काम करना चाहते हैं, जिससे दूसरों की भलाई हो।
- गाँधी जी के बारे में वे जो जानते हैं उसे लिखने के लिए बच्चों से कहें।
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और कारक चिह्नों से वाक्य बनाने को कहें।
- इस पाठ से दस शब्द चुनकर उनके वचन बदलने के लिए बच्चों से कहें।

पुनरावृति

- बच्चों को गाँधी जी के संबंध में कुछ वाक्य बोलने के लिए कहें।
- अपनी माताजी से संबंधित पाँच वाक्य लिखकर दिखाने के लिए बच्चों को कहें।
- बच्चों को अपने पिताजी के बारे में दस वाक्य लिखकर एवं उसे पढ़कर सुनाने के लिए कहें।
- सर्वनाम एवं विशेषण वाले शब्दों को एक साथ लिखवायें तथा सर्वनाम एवं विशेषण के रूप में अलग–अलग सूची बनाने के लिए कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा

बच्चों की संख्या, जो एकवचन और बहुवचन वाले शब्द लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को लिख कर अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दूसरों के सरल विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पत्र लिख सकते हैं।

बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो क्रिया एवं विशेषण की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संज्ञा एवं सर्वनाम की समझ रखते है।

पाठ - 13 : चाचा का पत्र

उद्देश्य

- अनुभवों को अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकने हेतु प्रोत्साहित करना।
- पत्र लिखने की क्षमता विकसित करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझ सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से उनके चाचा के बारे में पूछें कि वे क्या करते हैं, वे कैसे बातें करते हैं इत्यादि। बच्चों से बातचीत की मुख्य बातों को श्यामपट पर लिखने को कहें।
- पाठ्यपुस्तक में दिये गये नेहरू जी के चित्र को देखकर बच्चों से चित्र के बारे में बोलने के लिए कहें। उनका चित्र अगर स्कूल में हो तो पहचान करवायें।
- पाठ से बच्चों को बतायें कि कौन किसको पत्र लिख रहा है तथा पत्र में क्या लिखा गया है।
- दिये गये पत्र के आधार पर पत्र लिखने के प्रारूप के बारे में विस्तार से बात करें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाने को कहें। अनुमान को श्यामपट पर लिखें तथा शब्दकोश से उसका मिलान करवायें।

समूह–कार्य

- बच्चों के चार समूह बनाकर अलग–अलग शिक्षकों से नेहरू जी के बारे में पूछने को कहें। वर्ग–कक्ष में वापस आने के बाद समूह के बच्चों को सुनी गयी बातों के आधार पर नेहरू जी पर लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को लिखी हुई बातों को पढ़ने का मौका दें।
- चार या पाँच समूह बनाकर बच्चों को सोचकर लिखने का मौका दें कि वे लोगों की भलाई का कौन–कौन सा काम कर सकते हैं। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक–दो बच्चों को बोलने/लिखे हुए को पढ़ने का मौका दें।
- बच्चों के चार समूह बनाकर अलग–अलग पत्र तैयार करने को कहें। अलग–अलग समूह को भिन्न–भिन्न लोगों को पत्र लिखने को कहें, जैसे– समूह एक– चाचा को, समूह दो– मामा को, समूह तीन– दोस्त को, समूह चार– पिता को इत्यादि। पर हर समूह पत्र में चाचा नेहरु के बारे में लिखेंगे। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को लिखे पत्र को पढ़ने का मौका दें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- हर समूह को पोस्ट–कार्ड उपलब्ध करायें। मित्र या स्वयं को पत्र लिखकर विद्यालय का पता लिख कर डाक में डालने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को मन–ही–मन पढ़ने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़कर लिखने को कहें।

- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें।
- बच्चों से अपने स्कूल के बारे में पिताजी को पत्र लिखने के लिए कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को नेहरू जी के बारे में बताने को कहें।
- बच्चों से पत्र लिखने के नियम को पूछें।
- बच्चों से पूछें कि पत्र लिखने में किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पत्र लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दूसरों के सरल विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब लिखित दे सकते हैं।
बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संज्ञा की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सर्वनाम की समझ रखते है।	बच्चों की संख्या, जो क्रिया की समझ रखते है।	बच्चों की संख्या, जो विशेषण की समझ रखते हैं।

पाठ - 14 : बिजूका

उद्देश्य

- कविता का सस्वर एवं लयात्मक वाचन करना।
- अनुभवों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकने की समझ विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- सहचर शब्द की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- पाठ में दिये गये चित्र के बारे में बच्चों से उसका स्थानीय नाम पूछें तथा पता करें कि यह पुतला कैसे बनाया जाता है। बच्चों से पता करें, यह किस काम आता है।
- पाठ के आधार पर बिजूका के काम को बतायें।
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ कविता को पढ़कर सुनायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाने को कहें। उनके अनुमान को श्यामपट पर लिखें।
- बच्चों से किसी शब्द / वस्तु पर कविता बनवायें।
- बच्चों की बनाई कविताओं को सुनने–सुनाने का वातावरण बनाकर अवसर प्रदान करें।

समूह–कार्य

- बच्चों के चार समूह बनाकर बच्चों को एक–एक बिजूका बनाने को कहें।
- चार–पाँच समूहों में बच्चों को बाँटकर बिजूका पर कविता लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को लिखी हुई कविता को पढ़ने का मौका दें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- बच्चों को समूह में बाँटें और सहचर शब्दों की सूची बनवायें, उदाहरण भाई–बहन, नाना–नानी, इत्यादि।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को मन–ही–मन पढ़ने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़कर लिखने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें।
- पाठ को देखकर पाँच पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- अपने मित्र के बारे में दो पंक्तियों की एक कविता बनाने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को बिजूका के बारे में बताने को कहें।
- बच्चों से कविता को लय में सुनें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी कविता लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सहचर शब्द की समझ रखते हैं।

पाठ - 15 : शूलपाणि

उद्देश्य

- कहानी को हाव–भाव के साथ पढ़ने एवं सुनाने की क्षमता का विकास करना।
- अनुभवों को अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता का विकास करना।
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं विशेषण की समझ विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकने हेतु प्रोत्साहित करना।
- प्रश्नों जवाब लिखित दे सकने की क्षमता का विकास करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता का विकास करना।
- विपरीतार्थक शब्द की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से साधु–संतों से जुड़े उनके अनुभवों को सुनें। बच्चों को पुरानी कहानी सुनायें।
- बच्चों से पता करें–डाकुओं से क्या–क्या परेशानी हो सकती है। गाँव में अगर कभी चोरी हुई हो, तो उसके बारे में बात करें।
- पाठ के आधार पर शूलपाणि एवं भगवान महावीर की कहानी संक्षेप में सुनायें।
- पाठ को मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ पढ़े एवं बच्चों से भी पढ़वायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखवायें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ पर अनुमान लगाने को कहें। उनके अंदाज़ को श्यामपट पर लिखवायें। शब्दकोश की सहायता से शब्द के अर्थ तक पहुँचने में उनकी मदद करें।
- विपरीतार्थक शब्दों के उदाहरण देकर बच्चों को समझायें, जैसे रात–दिन / काला–सफेद / ऊपर–नीचे इत्यादि।

समूह–कार्य

- बच्चों के चार समूह बनाकर सभी समूहों को पाठ को नाटक के रूप में प्रस्तुत करने को कहें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- बच्चों को कहानी की किताब से समूह में विपरीतार्थक शब्दों की सूची बनाने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ का मौन वाचन करायें।
- अर्थ समझ में नहीं आनेवाले शब्दों को लिखकर शब्दकोश से उनके अर्थ ढूँढ़ने को कहें।
- बच्चों से कहानी को संक्षेप में लिखने को कहें।
- बच्चों से सुलेख लिखवायें।
- बच्चों को शब्द दें और शब्दों के समानार्थक और विपरीतार्थक शब्द लिखवायें।

पुनरावृति

- कुछ बच्चों से संक्षेप में लिखी हुई कहानी पढ़कर सुनाने को कहें।
- बच्चों को कहानी सुनाने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो विपरीतार्थक शब्दों को लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूपसे कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।
बच्चों की संख्या, जो संज्ञा की समझ रखते है।	बच्चों की संख्या, जो समानार्थक शब्द लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सर्वनाम की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो विशेषण की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो क्रिया की समझ रखते हैं।

पाठ - 16 : साहसी ऋचा

उद्देश्य

- अनुभव को सरल वाक्यों में अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- विपरीतार्थक शब्द की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- शिक्षक कहानी को स्वयं पढ़ें ओर बच्चों से पढ़वायें।
- बच्चों को अपने मन से कहानी लिखने के लिए प्रोत्साहित करें।
- बच्चों से कहानी की तरह की अन्य घटनायें सुनाने के लिए कहें।

समूह–कार्य

- बच्चों को कोई स्थिति दें और कहानी लिखने को कहें जैसे– काली रात थी, बादल गरज रहे थे, बारिश की बूँदे पड़ रही थीं......।
- बच्चों को समूह में बाँटे और उनसे संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, समानार्थक एवं विपरीतार्थक शब्दों की सूची बनवायें।
- बच्चों को समूह में पाठ में साहसी शब्द के विपरीतार्थक शब्द का उपयोग कर कहानी सुनाने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- शिक्षक बच्चों को उनके द्वारा किये गये साहसी काम को लिखने को कहें और उसे कक्षा में प्रदर्शित करायें।
- बच्चों से सुलेख लिखवायें।
- बच्चों को शब्द दे कर वाक्य बनवायें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से कहानी संक्षेप में सुनें।
- बच्चों से विपरीतार्थक और समानार्थक शब्द पूछें।

पाठ - 17 : बल्ब

उद्देश्य

- कविता का सस्वर और लयात्मक वाचन करना।
- अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- विपरीतार्थक और समानार्थक शब्दों को लिख सकने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पता करें कि अँधेरे से क्या–क्या परेशानियाँ होती हैं। परेशानियों की सूची बनवायें और बच्चों से श्यामपट पर लिखवायें।
- पाठ के आधार पर बल्ब के जन्म की कहानी संक्षेप में सुनायें।
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ पाठ पढ़कर सुनायें एवं बच्चों से भी सुनें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखवायें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाने को कहें। उनके अनुमान को श्यामपट पर लिखें। शब्दकोश से इसका मिलान करायें।

समूह–कार्य

- बच्चों के चार समूह बनाकर अंधकार की समस्या पर बातचीत करने एवं लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों से लिखी गयी बात बताने को कहें।
- चार या पाँच समूह में बच्चों को कविता के एक–एक अनुच्छेद को नई लय में बनाने के लिए कहें। प्रत्येक समूह से एक या दो बच्चों को नयी लय में गाने को कहें।
- बच्चों के चार समूह बनायें। बच्चों को गाँव में पिछले 20 सालों में हुए परिवर्तन के बारे में पता करने को कहें। बच्चों के कार्य को कक्षा में प्रदर्शित करें।
- गाँव में हुए परिवर्तन के बारे में समूह की जानकारी विद्यालय के चेतना–सत्र में सुनवायें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- समूह से कविता को कहानी के रूप में लिखने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ का मौन वाचन करायें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर शब्दकोश से उनके अनेक अर्थ ढूँढ़कर बताने को कहें।
- बच्चों को सुलेख लिखवायें।
- बच्चों को कुछ शब्द दें और उनके समानार्थक एवं विपरीतार्थक शब्द लिखने को कहें।
- बच्चों को श्रुतिलेख लिखवायें तथा उसकी जाँच करें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को पाठ के आधार पर दीया से बल्ब तक पहुँचने की कहानी सुनाने को कहें।
- बच्चों से समवेत स्वर में कविता लय में सुनाने को कहें।
- बच्चों से विपरीतार्थक और समानार्थक शब्दों को पूछें एवं जाँच करें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को लिख कर अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी कविता लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो विपरीतार्थक और समानार्थक शब्दों को समझ सकते हैं।

पाठ - 18 : बौना हुआ पहाड़

उद्देश्य

- अनुभवों को मौखिक रूप से अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- सहचर शब्द की समझ विकसित करना।
- कारक की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पहाड़ से जुड़े उनके अनुभवों को सुनें। उनसे पूछें कि क्या कभी वे पहाड़ पर चढ़े हैं, क्या उनके गाँव में पहाड़ है, पहाड़ कहाँ–कहाँ मिलते हैं इत्यादि।
- पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्रों के बारे में बातचीत करें।
- पाठ के आधार पर दशरथ माँझी द्वारा पहाड़ के बीच से रास्ता बनाने की कहानी संक्षेप में सुनायें।
- मानक उच्चारण और हाव–भाव के साथ पाठ पढ़कर सुनायें।
- बच्चों से बोल–बोलकर पाठ पढ़ने के लिए कहें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाने को कहें। उनके अनुमान को श्यामपट पर लिखें। शब्दकोश से उन शब्दों के अर्थ का मिलान करने को कहें।
- बच्चों को पाठ्यपुस्तक के पृ. सं. 74 पर अभ्यास के प्रश्न (3) के उदाहरण के साथ कारक के रूप के बारे में बतायें।

समूह–कार्य

- बच्चों के चार समूह बनाकर बच्चों को अपने गाँव की कठिनाइयों के बारे में बात करने तथा उन कठिनाइयों पर योजना बनाने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को गाँव की समस्या एवं योजना को सुनाने का मौका दें।
- चार–पाँच समूह बनाकर बच्चों को दशरथ माँझी की कहानी को कविता के रूप में तैयार करने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक–दो बच्चों को उस कविता को पढ़ने का मौका दें। कमियों को नज़रअंदाजकर प्रयास की सराहना करें।
- बच्चों के चार समूह बनाकर उन्हें बातचीत करने को कहें कि वे कौन–कौन सा अच्छा काम कर सकते हैं जिससे उन्हें कोई पुरस्कार मिल सकता है। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक–दो बच्चों को बोलने/लिखे हुए को पढ़ने का मौका दें।
- समूह में बच्चों से सहचर शब्दों की सूची बनवायें।
- अभ्यास के सवालों के हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- बच्चों से अखबार बनवायें। समूह में बच्चों को कहानी, कविता, चुटकुला आदि लिखने को कहें तथा उसे चार्ट–पेपर पर चिपका दें और उस अखबार को नाम देकर कक्षा में प्रदर्शित करने को कहें।
- बच्चों के चार समूह बनाकर उन्हें कारक के विभिन्न चिह्नों के उपयोग वाले वाक्य बनाने की प्रतियोगिता करायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को मन–ही–मन पढ़ने को कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर उनके अर्थ शब्दकोश से ढूढ़ँने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचे।
- बच्चों से सोचकर लिखने/बोलने को कहें कि उनके माता–पिता ने उनके लिए क्या–क्या किया है तथा वे अपने माता–पिता के लिए क्या–क्या करना चाहेंगे।
- किसी काम को करते वक्त चोट लगने पर उनके अनुभवों को लिखवायें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से पाठ के आधार पर दशरथ माँझी जी के बारे में बताने को कहें।
- दो या तीन बच्चों से संक्षेप में लिखी हुई कहानी पढ़कर सुनाने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को बोलकर अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सहचर शब्द की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों का जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कारक की समझ रखते हैं।

पाठ - 19 : सुबह

उद्देश्य

- कविता का सस्वर एवं लयात्मक वाचन करना।
- कविता लिखने एवं तुकबन्दी करने की क्षमता विकसित करना।
- अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकने की समझ विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं विशेषण की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से सुबह से जुड़े उनके अनुभवों को सुनें। अनुभवों को बच्चों द्वारा श्यामपट पर लिखवायें।
- कविता को ध्यान में रखकर बच्चों को बतायें कि सुबह में क्या–क्या होता है ?
- पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्र के बारे में बातचीत करें।
- मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव के साथ पाठ पढ़कर सुनायें एवं बच्चो से भी सुनें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ पर अनुमान लगाने को कहें। उनके अनुमान को श्यामपट पर लिखें। बच्चों के अनुमान के आधार पर शब्दों के अर्थ तक पहुँचने में उनकी मदद करें।

समूह–कार्य

- बच्चों के चार समूह बनाकर सभी समूहों को कविता का एक–एक अनुच्छेद लिखकर दें। उन्हें दिये गये अनुच्छेद का अर्थ लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों से उस अनुच्छेद का अर्थ सुनाने को कहें।
- चार या पाँच समूह बनाकर बच्चों को सुन्दर दृश्यों की सूची बनाने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों से इन दृश्यों के बारे में बताने के लिए कहें।
- बच्चों के तीन समूह बनाकर दोपहर, शाम एवं रात के बारे में बात करने एवं उनके संबंध में लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को लिखी गयी बातों को सुनाने का पर्याप्त अवसर दें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- बच्चों से 'सुबह' से संबंधित कहानी और कविता ढूँढ़ने को कहें।
- बच्चों से समूह में अखबार बनवायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को मन–ही–मन पढ़ने को कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर उनके अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़कर लिखने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें।
- बच्चों से कविता से संबंधित सवाल बनवायें।

पुनरावृत्ति

- समवेत स्वर में पूरी कविता नयी लय में सुनाने को कहें।
- दो या तीन बच्चों से कविता का अर्थ सुनाने को कहें।
- बच्चों से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दों से वाक्य बनाने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा							
बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को बोलकर अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संज्ञा की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सर्वनाम की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो क्रिया की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या जो विशेषण की समझ रखते है।

पाठ - 20 : पत्तियों का चिड़ियाघर

उद्देश्य

- कविता का सस्वर एवं लयात्मक वाचन करने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव से कविता पढ़कर सुनायें, एवं बच्चों को भी सुनाने को कहें।
- पत्तियों, पेड़–पौधों आदि के माध्यम से पर्यावरण–संरक्षण पर बातचीत करें।
- विभिन्न प्रकार की पत्तियों से विभिन्न पशु–पक्षियों की आकृतियाँ बन सकती हैं, यह सौंदर्य–बोध बच्चों में विकसित करने का प्रयास करें।

समूह–कार्य

- समूह में आस–पास की विविध पत्तियाँ इकट्‌ठा कर प्रत्येक के संबंध में कुछ वाक्य लिखकर कक्षा में प्रदर्शनी लगवायें तथा समूह के बच्चों को पत्तों के संबंध में बोलने को कहें।
- बच्चों के चार–पाँच समूह बनाकर उन्हें पत्तियों की मदद से अलग–अलग आकृतियाँ बनाने को कहें।
- बच्चो के समूह बनाकर उन्हें पत्तियों से संबंधित कविता बनाने को कहें। बच्चों की बनायी कविताओं को सुनने–सुनाने का पर्याप्त अवसर दें। इस प्रयास के लिए उनकी सराहना करें।

व्यक्तिगत कार्य

- इस कविता को नयी सजावट में कलात्मक तरीके से लिखने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा						
बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को बोलकर अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो किसी भी विषय पर खुद से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी कविता लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दूसरों के सरल विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कठिन शब्दों को सुनकर लिख सकते हैं।

पाठ - 21 : बरगद का पेड़

उद्देश्य

- अनुभवों को अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता विकसित करना।
- स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकने की समझ विकसित करना।
- विराम चिह्नों के प्रयोग की समझ विकसित करना।
- दूसरों के सरल विचारों को समझ सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकने की क्षमता विकसित करना।
- संवाद एवं कहानी लिखने की क्षमता विकसित करना।
- संज्ञा, सर्वनाम, वचन, एवं क्रिया की समझ विकसित करना।
- व्याकरण सम्मत वाक्य लिख सकने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षक–निर्देश

- बच्चों से बारी–बारी से पेड़ों से जुड़े अनुभवों को सुनें। जैसे– क्या उन्होंने कोई पेड़ लगाया है, क्या उनका कोई बगीचा है आदि।
- बच्चों से पेड़–पौधे से होनेवाले लाभों को सुनें तथा छूट रही बातों को बतायें।
- मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ पाठ को पढ़कर सुनायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक कर श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों के अर्थ शब्दकोश से पता करने को कहें।

समूह–कार्य

- पेड़ एवं पक्षी, पेड़ एवं हवा, पेड़ एवं मनुष्य के संवादों पर आधारित कहानी समूह में बनाने कहें।
- बच्चों के चार समूह बनाकर पेड़–पौधों से होनेवाले फायदों को लिखने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के एक या दो बच्चों को सुनाने का मौका दें।
- पेड़ से संबंधित एक–एक कविता लिखने को कहें। कविताओं को सुनने–सुनाने का पर्याप्त अवसर बच्चों को दें।
- अभ्यास के सवालों का हल समूह में बातचीत कर लिखने को कहें।
- पाठ्यपुस्तक से संज्ञा, सर्वनाम, वचन एवं क्रिया शब्दों की सूची बनवाकर प्रदर्शित करवायें।

व्यक्तिगत कार्य

- पाठ को मन–ही–मन पढ़ने को कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखकर शब्दकोश से उनके अर्थ ढूँढ़कर लिखने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवायें एवं जाँचें।
- अपनी पसन्द के एक पेड़ का चित्र बनाने को कहें।
- पेड़ एवं मनुष्य, पेड़ एवं पक्षी के आपसी संवाद लिखने को कहें।
- यदि पेड़ नहीं हों तो क्या होगा, इससे संबंधित विचार लिखकर सुनाने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बगीचे से जुड़े कुछ वाक्य बच्चों को लिखकर दिखाने को कहें।
- किसी परिचित पौधे का नाम पूछें तथा उसके बारे में मौखिक बताने को कहें।
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया शब्दों को बोलें तथा बताने कहें कि ये शब्द किस श्रेणी में आयेंगे।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा

बच्चों की संख्या, जो व्याकरण सम्मत वाक्य लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो स्वतंत्र रूप से कुछ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संवाद लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दूसरों के सरल विचारों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब लिखित दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो प्रश्नों के जवाब मौखिक दे सकते हैं।

बच्चों की संख्या, जो कहानी लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो विराम चिह्नों के प्रयोग की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संज्ञा की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सर्वनाम की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो क्रिया की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो वचन की समझ रखते हैं।

वर्ग-IV

हिन्दी

तीसरा सत्र	दूसरा सत्र	पहला सत्र	सीखने के बिन्दु
			कविता/कहानी/घटना को हाव-भाव के साथ सुनाता है।
			परिचित संदर्भ में बातचीत करता है।
			कहानी में आये पात्रों के बारे में राय देता है।
			कविता के अर्थ को समझता एवं लिखता है।
			बिना रुकावट के पढ़ता है।
			समान वर्णों के उच्चारण में अंतर कर लेता है।
			संदर्भ में आये नये शब्दों का अर्थ समझकर उपयोग करता है।
			अपने विचार को चार-पाँच वाक्यों में लिखना जानता है।
			प्रश्नों के उत्तर लिखना जानता है।
			शब्दों के अर्थ, उल्टे अर्थवाले शब्द एवं समान अर्थवाले शब्दों को जानता है।
			पत्र लिखना जानता है।
			लेख लिखना जानता है।